IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश की कला का इतिहास

ऋचा सिंह

शोधार्थी

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

स्वतंत्रता से पूर्व देश के अन्य हिस्सों की तरह उत्तर प्रदश में भी पाश्चात्य यथार्थवादी शैली, भारतीय पुनर्जागरण शैली एवं परंपरागत कला शैली में कलात्मक गतिविधियां चल रही थी। स्वतंत्रता के बाद कलाकारों ने भारतीय परंपरागत कला के रूढ़िगत पक्षों को अस्वीकार कर, उन्हें समकालीन चेतना के अनुरूप एक नया रूप प्रदान किया। सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों क साथ–साथ कला के क्षेत्र में भी आजादी के बाद लगभग 54 वर्षों से प्रयोगात्मकता एवं प्रगतिशीलता तक के मार्ग को ही अपना लक्ष्य चुना। चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स आदि अनेक विधाओं में ऐसे अनेक कलाकार उभरकर सामने आए जिन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए मापदंड स्थापित किए तथा अपनी पहचान बनाई। युवा कलाकारों ने वैचारिक स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, अभिव्यक्ति की तीव्रता तथा प्रस्तुतीकरण के नए–नए तरीकों एवं विभिन्न तकनीकों के प्रति अपनी रुचि प्रकट की तथा उनका प्रदर्शन किया है। कलाकारों ने अपनी कृतियों में वैचारिक विभिन्नता को महत्व दिया है। कला में अतीत और वर्तमान की समीक्षा, भविष्य की कल्पना तथा आत्म विश्लेषण की भावना को प्रधानता देने का प्रयास किया गया।

उत्तर प्रदेश में प्रारम्भिक दौर के उभरते हुए समकालीन कलाकारों में मदन लाल नागर, रणवीर सिंह बिष्ट, नरेंद्र नाथ राय, सुरेश्वर सेन, के.एस. कुलकर्णी, असद अली, आर.सी. सक्सेना, अवतार सिंह पंवार, बी. एन. आर्य, उमेश सक्सेना, मकबूल अंसारी, गोपाल कृष्ण, श्यामल दास गुप्ता, बी.एन. शुक्ला, रामचंद्र शुक्ल, बी. न्यूटन, सुमानव आदि का नाम लिया जा सकता है ।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में उत्तर प्रदेश की कला की स्थिति अत्यन्त सोचनीय एवं निराशाजनक थी। सन 1960 में औद्योगिक सम्मेलन के अनुसार प्रदेश में कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए 1911 में लखनऊ में राजकीय कला एवं शिल्प विद्यालय की स्थापना की गई जिसमें नेश्नियलहर्ड को प्राचार्य के रूप में नियुक्त किया गया। इस कला एवं शिल्प विद्यालय में भारतीय कला शैलियां के स्थान पर पाश्चात्य ब्रिटिश यथार्थवादी शैली में शिक्षण प्रारम्भ किया गया। एल.एम. सेन, इस विद्यालय की यथार्थ शैली के एकमात्र प्रतिनिधि कलाकार उत्पन्न हुए।

1925 में कला गुरु अवनीन्द्र नाथ के शिष्य श्री असित कुमार हाल्दार को लखनऊ कला विद्यालय के प्रथम भारतीय प्राचार्य के रूप में नियुक्त किया गया। श्री हाल्दार ने यहां पर पाश्चात्य यथार्थवादी शैली के साथ–साथ भारतीय कला शैली में भी शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। असित कुमार हाल्दार के साथ वीरे"वर सन, हिरण्मय राय चौधरी तथा एल.एम. सेन ने मिलकर स्वस्थ शिक्षा एवं शिक्षण का वातावरण बनाकर कला शिक्षण कार्य किया। 1925 के बाद से उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर परंपरागत कला के स्थान पर भारतीय पुनर्जागरण शैली का प्रभाव एवं आधुनिक कला के लक्षण देखने को मिलने लगे, इलाहाबाद में क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, वाराणसी में रणदा उकील तथा देहरादून में सुधीर रंजन खास्तगीर।

आजादी से पूर्व कुल मिलाकर कलात्मक वातावरण मध्यम गति का था। प्रमुख कलाकारों में असित कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, रणदा उकील, वीरेश्वर सेन, एल.एम. सेन, सुधीर रंजन खास्तगीर, वी. एन. जिज्जा, हिरण्यमय राय चौधरी, तारादास सिन्हा, पी.आर. राय, शिवानंद नौटियाल, सुकुमार बोस, ईश्वरदास, श्रीधर महापात्र, सुखबीर सिंहल, एच.एल. मेढ आदि कलाकारों का नाम लिया जाता है।

आजादी के बाद उत्तर प्रदेश का समकालीन कला परिदृश्य देश के अन्य राज्यों की तरह ही नए रूप में सामने आने लगा। आजादी के इन 74 वर्षों के बाद आज स्थिति एकदम भिन्न है। विगत वर्षों में प्रदेश के कलाकारों की कला विषयक जागरूकता एवं नीति की पहचान बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने के फलस्वरुप चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों ऐसे नाम उभरकर सामने आए जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई तथा अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों में भी अपनी भागीदारी निभाई है। कलाकार राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं अन्य अखिल भारतीय स्तर की प्रमुख कला प्रद"र्शनियों में ना केवल भाग लेते रहे हैं, वरन् कई कलाकारों को उनकी कृतियों के लिए पुरस्कृत कर सम्मानित भी किया गया है।

प्रदेश के अनेक युवा कलाकार अपनी रचनात्मक प्रतिभा के आधार पर भारत सरकार की छात्रवृत्ति एवं अध्ययन वृत्ति प्राप्त कर चुके हैं। इसक अतिरिक्त प्रदेश के अनेक कलाकार समय–समय पर विदेशी सरकारों के आमंत्रण पर विदेशों में अध्ययन एवं भ्रमण कर चुके हैं।

1947 के बाद अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं कलात्मक आदान–प्रदान के फलस्वरूप देश के अनेक कलाकार पाश्चात्य समकालीन कला के प्रति आकर्षित होने लगे थे। उनकी अभिव्यक्ति, कलात्मक शैली एवं सामग्री में पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देने लगा था। इस दौर में देश के अन्य महानगरों में एवं राज्यों के कलाकारों की तरह उत्तर प्रदेश के कलाकार भी आधुनिक कला से प्रभावित होने लगे थे। पारम्परिक कला शैली के स्थान पर वैचारिक स्वतंत्रता एवं अभिव्यक्ति के क्षेत्र में माध्यमों एवं शैलीगत विविध संभावनाओं के कारण आधुनिक कला के प्रति कलाकार स्वाभाविक रूप से आकर्षित होने लगे और धीरे–धीरे यह आकर्षण बढ़ता ही चला गया। धीरे–धीरे आधुनिकतावादी कलाकारां के भी कई वर्ग बन गए– मूर्त, अमूर्त, तथा आंशिक अमूर्त आदि। कुछ कलाकार यथार्थवादी तथा भारतीय परम्परागत शैली में भी नवीनता के साथ कार्य करते रहे हैं। आजादी से आज तक के दौर में कलात्मक माध्यमों एवं शैलियों के क्षेत्र में पारम्परिक प्रचलित माध्यमों के अलावा कई नए माध्यम एवं शैलियों की खोज हो चुकी है।

स्वतंत्र प्रगतिशील कलाकारों में मदन लाल नागर, आर.एस. बिश्ट, दिलीप दास गुप्ता, रतन मिश्रा, रामचंद्र शुक्ल, नरेन्द्र नाथ राय, सुरेश्वर सेन, के.एस. कुलकर्णी, असद अली, बालादत्त पाण्डे, आर.के. भटनागर, अमरनाथ कुंडू, श्रीपत राय, एस.पी. कपूर, अनिल चौधरी, पी.सी. लिटिल, बी.बी. चक्रवर्ती, सुरेश कुमार श्रीवास्तव, आर.एस. धीर, एन. खन्ना, प्रकाश करमाकर, आर.पी. डबराल, पम्मी लाल, ए.पी. गज्जर, बी. एन. शुक्ल, एच.एन. मिश्र, देवेंद्र सेठ, अशोक ठाकुर, ए.के. धर, अश्वनी कुमार, हरीश श्रीवास्तव, राजेन्द्र प्रसाद, आर.बी. सेठ, प्रभा पंवार आदि कलाकारों को रखा जाता है।

अति यथार्थवादी एवं यथार्थवादी शैली में कार्य करने वाले कलाकारों में बी.पी. काम्बोज, पी.सी. लिटिल, एम.एस. आर्य, प्रणाम सिंह आदि कलाकारों के नाम प्रमुख हैं। प्रभाववादी चित्रकारों में रणवीर सक्सेना, डी.पी. धूलिया, अजमत शाह, सतीश चन्द्र, सुरेश, सुमानव, मोहम्मद सलीम आदि को रखा जा सकता है। इसी दौर में भारतीय पारंपरिक शैली में नवीनतम तकनीक के साथ गतिविधियां करने वालां में नारायण श्रीकुमार मिश्र, रमेश चन्द्र साथी, वासुदेव स्मार्त, सनत कुमार चटर्जी आदि प्रमुख हैं। विविध शैलियों में कार्य करने वालों में सुमानव, फ्रैंक वेसली, चित्रलेखा सिंह, शरद पाण्डे, नित्यानंद महापात्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वा"ा चित्रण शैली को प्रारम्भ में परंपरागत तथा बाद में नवीन प्रयोग के साथ चित्रण करने वाले कलाकारों में बद्रीनाथ आर्य तथा विश्वनाथ मुखर्जी आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा।

मूर्तिकला के क्षेत्र में आधुनिक एवं पारम्परिक माध्यमों व मान्यताओं को अपनाकर विभिन्न माध्यमों पत्थर, लकड़ी, ब्रोंज, प्लास्टर, सीमेन्ट, टेराकोटा, ग्लास, क्रोमियम प्लेट, फाइबर ग्लास, एल्युमीनियम, लोहा, प्लास्टिक, आदि पर कार्य करने वाले मूर्तिकारों में अवतार सिंह पंवार, एस.जी. श्रीखंडे, बी.पी.एस. गहलोत, खालिद कमाल किदवई, बी.एस. परमार, रमाशंकर, एम.वी. कृष्णन, असद अली, एच.के. मिश्र, जे.एन. सिंह, जितेन्द्र कुमार, बलवीर सिंह कटट, पवन कुमार, ललिता कटट, मदनलाल, रमेश बिष्ट, मुकुल पंवार, कामता

प्रसाद श्रीवास्तव, सत्यजीत शेरगिल, हबीब मौसवी, बी.एस. परमार, ईश्वर चन्द्र गुप्ता, सुधा अरोड़ा, ताहिर मियां, गुफरान किदवई आदि का कार्य उल्लेखनीय रहा है। सिरेमिक्स कलाकारों में विमल बिश्ट, सुधा अरोड़ा तथा के.वी. जेना आदि सक्रिय रहे हैं।

स्वतंत्रता के उपरान्त के विगत 5 दशकों में ग्राफिक कला के क्षेत्र में भी कलाकारों का आकर्षण एवं रुचि बढ़ी है। विभिन्न कलाकारों ने उडकट, एचिंग, एक्वाटिंट, लिथोग्राफ आदि के माध्यमों में प्रयोग किया है। विभिन्न कलाकारों में मनोहर लाल, श्याम शर्मा, दीपक बनर्जी, रेखा कक्कड़, जय कृष्ण अग्रवाल, कुसुम दास, गोपाल दत्त शर्मा, देवेंद्र कौर, रंजना जोशो, अनीता मैसी, एस. यादव आदि का नाम लिया जा सकता है।

आजादी से पूर्व राज्य में लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी कला एवं शिल्प प्रशिक्षण के केंद्र थे। स्वतंत्रता के बाद राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भी कला विषय पर स्नातकोत्तर की डिग्री दी जाने लगी। यह डिग्री आगरा, कानपुर, मेरठ तथा बरेली आदि विश्वविद्यालयों में दी जाती है।

आजादी के बाद नवंबर 1954 में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी की स्थापना दिल्ली में की गई। 1955 से यह अकादमी चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक कला के क्षेत्र में देश के विभिन्न राज्यों के कलाकारों की कलाकृतियों को प्रति वर्ष प्रदर्शित करने में लगी तथा उसमें से चयनित कलाकृति के लिए कलाकारों को अकादमी द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया जाने लगा।

उत्तर प्रदेश की कला के विकास में जिन कलाकारों का सहयोग रहा है उनको मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। वह कलाकार जो उत्तर प्रदेश में शिक्षा प्राप्त कर देश की राजधानी दिल्ली तथा देश के अन्य राज्यों में जाकर कलात्मक गतिविधियां कर रहे हैं तथा उत्तर प्रदेश की कलात्मक गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। दूसरे वर्ग में वे कलाकार हैं जो देश के अन्य राज्यों से कला प्रशिक्षण प्राप्त कर यहां पर आये तथा कलात्मक गतिविधियों अथवा कला प्रशिक्षण कार्य कर राज्य की कला के विकास में सहयोग देकर उत्तर प्रदेश की कला गतिविधियों से जुड़े हुए हैं।

तोसरे वर्ग में वे कलाकार हैं, जो उत्तर प्रदेश के विभिन्न कला संस्थानों/विद्यालयों से प्रशिक्षण प्राप्त कर यहीं पर रहकर कलात्मक गतिविधियों व विभिन्न अनुशासनों का सजन कर रहे हैं तथा कला प्रद"र्निया लगा रहे हैं। आजादी के बाद से चित्र, मूर्ति तथा गाफिक आदि कलाओं के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के अनेक कलाकार ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी के पुरस्कारों से सम्मानित किए जा चुके हैं।

1962 में उत्तर प्रदेश में राज्य ललित कला अकादमी की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य कला एवं कलाकारों को प्रोत्साहित करना तथा कला के प्रचार एवं प्रसार हेतु गतिविधियां आयोजित करना है। अकादमी ने धीरे–धीरे राज्य की आम जनता को प्रदर्शनियों, व्याख्यानों, संगोश्ठियों एवं कला शिविरों के द्वारा आधुनिक कला जगत के समीप लाने का प्रयास किया, इसी कार्यक्रम के अंतर्गत राष्टोय एवं अंतर्राष्ट्रीय एवं राज्य की प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जाता रहा है। अकादमी राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न माध्यम के कला शिविरों का आयोजन करती रहती है।

समकालीन कला के विकास के लिए अकादमी की ओर से कला त्रैमासिक व कला दीर्घा तथा अन्य प्रकाशन होते रहे हैं। कला के संरक्षण एवं विकास के उद्देश्य से अकादमी कलाकृतियां भी संग्रहित करती रहती है। समकालीन कला एवं कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी द्वारा 1964 से वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है जिनमें से चुनी हुई कलाकृतियों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

स्वतंत्रता के प"चात् उत्तर प्रदेश की कला के विकास में अकादमी द्वारा बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जा रही है, जो सराहनीय है। उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी की गणना आज देश की महत्वपूर्ण राज्य अकादमियों में की जाती है। यह आज राज्य की कला के विकास, प्रचार एवं प्रसार का प्रमुख केंद्र बनी हुई है। आज देश में जहां समकालीन कला एवं कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए महानगरों में संस्थायें हैं, खरीददार हैं, प्रचार के माध्यम है, आए दिन होने वाली कलात्मक गतिविधियों को पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो एवं दूरदर्शन के माध्यम से जनता तक पहुंचाया जा रहा है। इतना ही नहीं इंटरनेट पर भी कला का बाजार फैला

हुआ है। वहीं दूसरी ओर छोटे शहरों के कलाकारों को उक्त प्रोत्साहन तथा प्रचार के पल ढूंढ पाना भी मुश्किल हो रहा है, फलस्वरुप कलाकारों की सृजनात्मकता अभिव्यक्ति आथिक एवं अन्य कारणों से मन में सिमट कर रह जाती है।

उत्तर प्रदे"ा में समकालीन कला के संरक्षकों तथा खरीददारों की कमी रही है। मात्र कुछ खरीददार/संरक्षक मुख्यतः कलाकृतियॉ या तो कलाकारों की प्रतिश्ठा के आधार पर या सजावट अथवा व्यक्तिगत भौक के उद्दे"य के आधार पर खरीदते हैं। राज्य में स्वतंत्रता के बाद पिछले 4–5 द"ाकों का दौर आधुनिकता एवं प्रयोगवादी कला का रहा है। ऐसी स्थिति में कला के क्षे_त्र में समर्पित एवं गम्भोरता से काम करने वाले कलाकारों ने अपने क्षेत्र में पहचान बनाई है तथा राष्ट्रीय व अन्तरराष्टोय स्तर पर भी नाम कमाया है। कुल मिलाकर उत्तर प्रदे"ा के कला परिदृ"य में आजादी के बाद समकालीन कला का दौर सामाजिक यथार्थवादी भौली, अमूर्तवादी भौली तथा विविध भौलियों का रहा है।

चित्रों में सर्वोत्तम चित्र वही होता है, जो रूप में जीवन डालने वाले उद्योगों को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति देता हो।

– लियोनार्दो द विन्"ाो

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1. कला दीर्घा– volume- 15, No-30, April- 2015
2. कला दीर्घा– volume- 13, No-26, April- 2013
3. कला दीर्घा– volume- 14, No-27, October- 2013
4. कला त्रैमासिक– जुलाई 2002
5. भारतीय कला सम्पदा– डॉ. एन. एल. श्रीवास्तव, 2001
6. युग–युगीन भारतीय कला– महे"ा चन्द्र जो"ी,1994
7. Variegated vista- Shefali Bhatnagar